GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

स्वामी विवेकानंद के दर्शन में परमसत् का संशोधनात्मक निरूपण

डॉ. धर्मेश पी. वावैया

सहायक प्राध्यापक (GES-II)
सरकारी आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, तालाला गीर
dharmeshvavaiya@gmail.com

सारांश

वेदांत और उसके व्यवहारी अनुप्रयोग के मूल सिद्धांतों को वेदों और उपनिषदों में वर्णित सिद्धांतों से ही लिया है। विवेकानंद अद्वैत तर्क का उपयोग करते हुए हिंदू संस्कृतिक सुधार और उत्तर भारतीय समाज के लिए दार्शनिक विचारों की नीव रखी। वेदांत विश्व के प्राचीनतम धार्मिक ज्ञान के स्रोतों में से एक है। शंकराचार्य अद्वैत वेदांत के संस्थापक है और वेदांत के दार्शनिक थे। आधुनिक युग में नए वेदांत के आंदोलन में विवेकानंद का योगदान अतुलनीय है। उनके व्यावहारिक वेदांत पारंपरिक संस्कृति की रेखा में एक नया भाष्य है। उन्होंने वेदांत को केवल अपने सैद्धांतिक अध्ययन तक ही सीमित नहीं रखा परंतु उनको व्यावहारिक जीवन तक उपयोग किया विवेकानंद वेदांत दर्शन द्वारा व्यक्ति को निस्वार्थ गतिविधि के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार उन्होंने वेदांत दर्शन को एक नया रूप देने का प्रयास किया है। जो मानव जाति के विकास के लिए बहुत ही व्यावहारिक और महत्वपूर्ण था।

मुख्य शब्द : विवेकानंद, ब्रह्म, परमसत्, अद्वैत

प्रस्तावना

विवेकानंद के चिंतन की नींव मुख्यत वेदांत मे थी। स्वामी विवेकानंद नव वेदांत बाद के प्रणेता थे। भारत में उपनिषदों की दार्शनिक परंपरा के शंकराचार्य,रामानुजाचार्य, माधवाचार्य आदि ने और भी आगे बढ़ गया। विवेकानंद ने इनकी दार्शनिक विचार पद्धति का पुनरावलोकन किया एवं नए वेदांत वाद का प्रतिपादन किया। स्वामी विवेकानंद ने सत् को परिभाषित करते हुए कहा है कि जो देश काल और कार्य कारण से संबंधित हो वही सत्य है। विवेकानंद उपनिषदों में अभिव्यक्त आधारभूत अंतर्दृष्टिय पर आधारित वेदांत की संकल्पना को व्यापक रूप से लेते हैं। यद्यपि उनका मुख्य लक्ष्य शंकराचार्य की प्राचीन द्रष्टि पर था। विवेकानंद के अनुसार वेदांत दर्शन ही एकमात्र वैसा दर्शन नहीं है जिसे मनीषियों ने कामानुसार व्यवस्थित ढंग से विकसित किया है। इतिहास के बाद वाले काव्य खंड में इसी प्रस्थान को प्रमुख आधार मानकर दर्शन की कई आशाए विकसित हो गई। उनमें से तीन मतवाद द्वैत, विशिष्टाद्वैत और अद्वैत ऐसे मतवाद है जो संपूर्ण वेदांत दर्शन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पाश्चात्य दर्शन में परम सत् का निरूपण

दर्शन का प्रधान प्रश्न है - जगत की चरम सत्ता क्या है ? इसी प्रश्न के समाधान में पाश्चात्य और भारतीय दर्शन युक्तिपूर्वक प्रयास करते हैं। प्रायः सभी दर्शनों में सत् को परिभाषित किया गया है। ग्रीक दर्शन की प्रारम्भिक विचारधारा बाह्य प्रकृति के विवेचन की ओर थी। सर्वप्रथम थैलीज़ ने 'जल' को परम तत्व माना। एनेक्सीमेंडर ने परमतत्व को 'असीम' कहा। उसके अनुसार , परम तत्व अनन्त, नित्य, स्वयंभू, अविनाशी तथा अपरिणामी है। इस परम तत्व से सब भूतों की उत्पत्ति है, इसी में उनको स्थिति है और इसी में उनका लय है। एनिक्जिमेनीज का परमतत्त्व 'वायु' है, वह असीम और अनन्त है। पाइथागोरस ने "स्वरूप' या द्वारा, हेराक्लीट्स ने 'सार्वभौम' विज्ञान द्वारा, पार्मेनाइडिन ने 'शुद्ध सतारुप विज्ञान 'एनेक्जेगोरस ने 'परमविज्ञान' द्वारा और प्रोटेगोरस ने 'मानव मानदण्ड' द्वारा परमतत्व को आत्माभिमुख करने का प्रयास किया। साक्रेटीज ने तत्व के विज्ञान स्वरूप का प्रतिपादन किया और उसके दर्शन का केन्द्र बना दिया। प्लेटो के अनुसार विज्ञान नित्य, अविकारी, अविनाशी, शाश्वत, सामान्य और सत् है। अरस्तु सत् को परम तत्व या परम द्रव्य मानता है। आधुनिक युग के युग के पाश्चात्य दार्शनिक डेकार्ट और स्पिनोजा दोनों ने परमतत्व को द्रव्य कहते हुए इसे इस प्रकार पारिभाषित किया है - द्रव्य वह है जिसकी स्वतंत्र सत्ता हो और जिसके ज्ञान के लिए अन्य वस्तु की अपेक्षा न हो। परन्तु लाईबनीज़ के अनुसार, द्रव्य वह है, जिसमें स्वतंत्र शक्ति हो। फिक्टे चित्त् को सत् कहता है, उसके अनुसार वस्तुतः चित् की ही सता है। फिक्टे ने परमतत्व को आत्मा कहा और शेलिंग ने इसे प्रकृति कहा है। हेगल के अनुसार एकमात्र तत्व निरपेक्ष या पूर्ण विज्ञान है | सम्पूर्ण विश्व इसी का परिणाम है। विज्ञान की ही नित्य सत्ता है। यह शुद्ध चैतन्य रूप है। १

भारतीय दर्शन में परम सत् का निरूपण

भारतीय दर्शन में परम तत्व की विशद व्याख्या मिलती है। जैनदर्शन में सत्, तत्व, अर्थ, द्रव्य आदि शब्दों का प्रयोग तत्व सामान्य के लिए एक ही अर्थ में होता रहा है। यहाँ रात की व्याख्या इस प्रकार की गयी है - जो अपरिव्यक्त स्वभाव वाला है, उत्पादव्यय और ध्रोव्ययुक्त है, गुण और पर्याय युक्त है, वही द्रव्य है। चार्वाक दर्शन भौतिकवादी दर्शन है जिसके अनुसार विश्व का मुलभूत तत्व जड़ तत्व है। यह तत्व से भिन्न किसी चैतन तत्व को स्वीकार नहीं करते। माध्यमिक दर्शन शून्य को परम तत्व कहता है। इसके अनुसार तत्व बुद्धि की सभी कोटियों से परे है। वस्तुतः उसकी अनुभूति प्रज्ञा द्वारा ही हो सकती है। न्याय दर्शन परम तत्व को प्रमेय कहते हुए प्रमेयों में सर्वोच्च प्रमेय आत्मा को मानता है। वैशेषिक दर्शन इसे द्रव्य के अन्तर्गत रहता है और न्याय के अधिकतम करीब है | सांख्य दर्शन का मूल तत्व प्रकृति है। इसे योगदर्शन भी स्वीकार कर लेता है।

भारतीय दर्शन में परम तत्व की सर्वोत्कृष्ट व्याख्या उपनिषदों (औपनिषदिक दर्शन) में देखने को मिलती है। उपनिषदों के अनुसार बल ही परम तत्व है। वह ही एकमात्र सता है। वह जगत का सार है। वह जगत की आत्मा है। वह जिससे इन सब भूतों की उत्पत्ति हुई है और जन्म होने के पश्चात जिसमें ये सब जीवन धारण करते हैं और वह जिसके अन्दर मृत्यु के समय ये विलीन हो जाते हैं, वही ब्रह्म है। शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है। ब्रस व्यक्तित्व से शून्य है। ब्रह्म सब भेदों से शून्य है। इसलिए ब्रह्म को निर्वैयक्तिक कहा गया है। ब्रेडले ने भी ब्रह्म को व्यक्तित्व से शून्य माना है। रामानुज के अनुसार ब्रह्म में व्यक्तित्व है। शंकर ने ब्रह्म को अनिर्वचनीय माना है। राधाकृष्णन के अनुसार 'परमतत्व अपरिवर्तनशील है, उसका न विकास होता है न रूपान्तर होता है, वह निरन्तर एक ही समान रहता है। वल्लभ वेदान्त में प्रमेय तत्व एकमात्र ब्रह्म है, जो सर्वधर्म विशिष्ट है, सविशेष या सगुण है, शुद्ध धर्म के समान हेय गुण रहित है। माध्व मत में स्वतन्त्र और परतन्त्र, दो सत्ताएं हैं। स्वतन्त्र तत्व परब्रह्म है, परतन्त्र तत्व चेतन और अचेतन है।

स्वामी विवेकानंद के दर्शन में परम सत्त् का निरूपण

स्वामी विवेकानंद ने सत् को परिभाषित करते हुए कहा है कि जो देश काल और कार्य कारण से संबंधित हो वही सत्य है।२ यद्यपि स्वामी विवेकानन्द के चिंतन पर समग्र भारतीय दार्शनिक परम्परा का स्पष्ट प्रभाव है परन्तु वे शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत से सर्वाधिक प्रभावित हुए। इनके दर्शन का सार 'ब्रह्म' की धारणा है। ब्रह्म का अर्थ है परम सत्। ब्रह्म ही सच्चिदानन्द है, जो परम शुद्ध सत, ज्ञान और आनन्द है। सत्, चित् और आनन्द ब्रह्म के गुण नहीं वरन ये स्वयं ब्रह्म ही हैं। ये तीन पृथक सत्ताएं नहीं हैं बल्कि तीन होते हुए भी एक है। ब्रह्म सर्वोच्च सत्ता है, परम सत्य है उन्होंने निरपेक्ष, निराकार ब्रह्म को ही परम सत् माना है।

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

स्वामी विवेकानन्द ने ब्रह्म (परमसत) का विवेचन करते हुए कहा है कि वह एक है । वह स्वयंभू है । उसका कोई कारण नहीं है । न उस मैं दिक् है, न काल है और न कार्यकारण । ३ एकमात्र सत्ता उसी की है। केवल उसी का अस्तित्व है अन्य हर एक पदार्थ का अस्तित्व उसी मात्रा में है, जिस मात्रा में वह उस सता को प्रतिभासित करता है । यह धारणा पाश्चात्य दार्शनिक प्लेटो से मिलती-जुलती है। प्लेटों ने कहा कि, जो पदार्थ विज्ञान की ओर जितना अभिमुख है, उसकी उतनी ही अधिक सता है । ब्रह्म ही एकमात्र स्वयं प्रकाश है । अन्य प्रत्येक पदार्थ उसी से प्राप्त उधार ली हुयी ज्योंति से ज्योतित हैं । अन्य हर पदार्थ उतना ही ज्ञान प्राप्त कर पाता है जितना वह उसके ज्ञान को प्रतिबिम्बित करता है । वही एकमात्र आनन्द है । क्योंकि उसमें कोई अभाव नहीं है। वह सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी है, सबका सारतत्व है, वह सच्चिदानन्द है । वह अविकल है, गुणातीत है, सुख-दु:ख विनिर्मुक है, वह न जड़ है न ही चेतन । वह सर्वोपरि है, अनन्त है, निर्गुण है, हर वस्तु में व्याप्त है । वह विश्व की अनन्त आत्मा है। मुझ मैं, आप में और प्रत्येक पदार्थ में जो कुछ सत्य है, वह वही है । अर्थात् तत्वमसि ।४

विवेकानन्द ब्रह्म को अज्ञेय मानते है । क्योंकि जो सबका ज्ञाता है, जो सब ज्ञानों का आधार है उसे किस प्रकार जाना जा सकता है । परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि स्वामी जी स्पेन्सर के समान अज्ञेयवादी हैं । वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि आत्मा न ज्ञेय है न अज्ञेय क्योंकि अज्ञेय मानने से भी पहले उसे विषय बनाना पड़ेगा । वह ज्ञेय और अज्ञेय से अनन्त गुना ऊंचा है।५ स्वामी जी का अज्ञेयवाद काण्ट से भी सर्वथा अलग है।

बी. एस. नरवने के शब्दों में, अपने वेदान्त के प्रतिपादन मैं विवेकानन्द सता की अविच्छिन्नता पर बल देते हैं । सत्ता एक है पर वह विविध रूपों में विद्यमान है, जो एक-दूसरे से अभेद्य अवरोधों द्वारा विभक्त नहीं है, सब कुछ एक है । कोई अन्तराल नहीं है, एकता ही नियम है।६ जब ब्रह्म अज्ञेय, अनिर्वचनीय और अवर्णनीय है तो यह निश्चित है कि उसके विषय में किसी भी प्रकार के विशेषणों का प्रयोग नहीं किया जा सकता । फिर भी ब्रह्म को सत्, चित् और आनंद शब्दों से अभिहित किया जाता है । अद्वैत वेदान्ती होने के नाते विवेकानन्द ब्रह्म को एक रस मानते हैं । वे निरपेक्ष में किसी प्रकार का भेद नहीं मानते। उनके अनुसार ब्रह्म एक शुष्क एवं नीरस अस्तित्व नहीं है । वह अनेकता में एकता है । वह विश्व में होकर भी विश्व से परे है । वह समस्त विश्व का आधार है । वह सर्वाधार है ।

विवेकानन्द कहते हैं, 'बुद्धि उसी निर्गुण की अवधारणा इस विश्व के सृष्टा, पालन कर्ता और संहारक के रूप में उसके उपादान और निमित्तकारण के रूप में, परम शासक के रूप में - जीवनमय, प्रेममय और परम सौन्दर्यमय के रूप में करती है। ७ परमसत्त की सर्वोपरि अभिव्यक्ति ईश्वर अथवा सर्वोच्च शासक के रूप में सर्वोच्च या सर्वशक्तिमान जीवन या ऊर्जा के रूप में हुई है। परम ज्ञान अपनी सर्वोच्च अभिव्यक्ति परम प्रभु के अनन्त प्रेम में कर रहा है। परम आनन्द की अभिव्यक्ति परम प्रभु में अनन्त सौन्दर्य के रूप में होती है । आत्मा का सर्वोपरि आकर्षण वही है।

वह परात्पर ब्रह्म यथार्थ अनंत है। उच्चतम से लेकर निम्नतम प्रत्येक सत्ता अपनी-अपनी कोटि के अनुरूप ऊर्जा और आकर्षण तथा साम्यावस्था के लिए संहर्ष की अभिव्यक्ति करता है । परन्तु परम ऊर्जा, प्रेम, सौन्दर्य (सत्य - शिव -सुन्दर) एक शरीरी हैं, इस विश्व की अनन्त जननी - है । वह सर्वव्यापी है, फिर भी विश्व से परे है। वह परम आत्मा है, फिर भी प्रत्येक आत्मा से पृथक है वह विश्व की जननी है क्योंकि उसी ने इसे उत्पन्न किया है । वह विश्व नियंत्रिक है क्योंकि वही इसकी परम प्रेममय निर्देशिका है और अन्ततः हर वस्तु को स्वयं में पुनः ले जाने वाली है। उसी के आदेश से सूर्य, चन्द्र, सब तारे प्रकाशमान है, मेघ बरसते है, मृत्यु धरती पर अदृश्य विचरण किया करती है। फिर भी ब्रह्म निर्गुण है।

ब्रह्म शब्द अन्ततः परमसत् का ही वाचक है जो सम्पूर्ण संसार की उत्पत्ति और विकास का आधार है । 'ब्रह्म' बृहत्तम और पूर्ण है तथा वह अन्य वस्तुओं को विकसित करता है ।" ब्रह्म' शब्द का यह अर्थ उपनिषद् युग जाने के पूर्व निश्चित हो गया था । सम्पूर्ण उपनिषदों के प्रश्नोत्तर मैं इस अर्थ का प्रयोग किसी न किसी रूप में मिलता है । उपनिषदों के भाष्यकार भी 'ब्रह्म' शब्द का उक्त अर्थ ही लेते है । ब्रह्मसूत्र के रचयिता बादरायण का भी निश्चित मत है कि उपनिषद् काल में ब्रह्म शब्द का प्रयोग निरपेक्ष सत् के अर्थ में किया जाता रहा है। वह सम्पूर्ण संसार का उपादान और निमित्त कारण माना जाता रहा है। जहां तक शंकर का प्रश्न है, निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि उनकी दृष्टि में बल का निरपेक्ष अस्तित्व ही सम्पूर्ण सृष्टि का आधार है । किन्तु उन्होंने ब्रह्म शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया है - एक मुख्य और दूसरा गौण । मुख्य अर्थ में उसका प्रयोग निरपेक्ष परमसत् के लिए किया गया जो पूर्णतः निर्गुण और अनिर्वचनीय है । गौण अर्थ में उसका प्रयोग ईश्वर के लिए हुआ है जिसे हम सगुण ब्रह्म कह सकते है। ८

उपसंहार

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विवेकानन्द ने अन्य भारतीय दार्शनिकों की तरह परम सत्ता या सर्वोच्च सत् 'ब्रह्म' को ही माना है। स्वामी विवेकानन्द ने जिस वेदान्त के 'ब्रह्म' को परम सत् स्वीकार किया है, वह न तो हेगल का स्थूल परमतत्व है, न माध्यमिकों का शून्य और न ही योगाचारियों का आलय विज्ञान। उन्होंने अद्वैत वेदान्त का अनुयायी होने के कारण 'ब्रह्म' की निरपेक्ष, निर्विशेष एवं निर्गुण सत्ता को स्वीकार किया है । और यही उनके दार्शनिक चिन्तन का मूल है। भारतीय दर्शन में, जिसका प्रारम्भ वैद और उपनिषदों से होता है, विश्व के चरम तत्व का आध्यात्मिक माना गया है और उसे ही 'ब्रह्म' की संज्ञा दी गयी है । ब्रह्म के स्वरूप का निरुपण ही उपनिषद, ब्रह्म सूत्र, शंकर, रामानुज, वल्लभ और निम्बार्क आदि का लक्ष्य रहा है । स्वामी विवेकानन्द भी इसी भारतीय परम्पर मैं उत्पन्न हुए और वे मी 'ब्रह्म' को ही विश्व का परम तत्व मानते हैं। उनके अनुसार 'ब्रह्म' ही एकमात्र सत्य है । सम्पूर्ण जगत ब्रह्म की ही अभिव्यक्ति है ।

संदर्भ- सूची

[1] चंद्रधर शर्मा, पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली-२०१६
[2] भरत कुमार तिवारी, विवेकानंद का दार्शनिक चिंतन
[3] विवेकानंद का परम सत् पर व्याख्यान, लंदन, १८६३
[4] विवेकानंद का परम सत् पर व्याख्यान, लंदन, १८६३
[5] विवेकानंद, आत्म तत्व विवेक, रामकृष्ण मठ, नागपुर, १९६५
[6] नरवने, बी. एस, आधुनिक भारतीय चिंतन, अनु- नेमिचंद जैन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९६६
[7] नरवने, बी. एस, आधुनिक भारतीय चिंतन, अनु- नेमिचंद जैन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९६६
[8] विवेकानंद, ज्ञान योग, रामकृष्ण आश्रम, नागपुर. पृष्ठ -१२८

https://www.gapbhasha.org/